सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 195

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 39
मार्च – 2021

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

गुरूबंधु भगिनियों

पिछले अंक 194 से आगे...

पिछले कुछ वर्षों से आप भक्तों ने कार्यकेन्द्र पर उपस्थित रह कर पंचमी, एकादशी, पौर्णिमा और अमावश्या के दिन "अनुष्ठान" रखने की आज्ञा हुई, उसके अनुसार आप अनुष्ठान करते भी हो, फिर भी यह अनुष्ठान इसी दिन करने का क्या महत्व है?यह देवीदेवताओं के प्रीत्यर्थ है या स्वयं के प्रीत्यर्थ है? इसे आप भक्त समझ पाये हो ऐसा मुझे नहीं लगता। साधारणतौर पर पंचमी, एकादशी, पौर्णिमा, अमावश्या कहने पर, हमारा ध्यान उन तिथीयों की ओर ही जाता है। वास्तविकता में यह साधना देवताओं के प्रीत्यर्थ न होकर, आप भक्तों को प्राप्त हुई अवस्थाओं में हम अपने काया–वाचा–मन से कितने एकरूप हुए है इसका अनुमान जानने के लिये श्री गुरू ने इन दिनों को तय किया है। "पंचमी" का अर्थ शुद्ध या वद्य पक्ष पांचवा दिन ऐसा नहीं, पंचमी याने हमारा देहिक माध्यम जिनकी धारणा पंचतत्वों से (पृथ्वी, आप, तेज, वायु, आकाश) हुई है। इस दिन का अनुष्ठान उन तत्वों से हितसम्बन्धित होता है। और यद्यपि इन्हीं पांच तत्वों से हमारे इस देह की धारणा होती है, फिर भी हमारे इस माध्यम में ये पांच तत्व निसर्ग के प्रमाणानुसार नहीं होते जिसके कारण जीवन व्यतीत करते वक्त वो समतोलरूप से नहीं हो पाता। इसलिये प्रथमतः साधना मार्ग के आरम्भ में ही इन पांच तत्व जो कि विषम प्रमाण होते है उन्हें

कृपाशीर्वाद द्वारा निसर्ग के अनुसार समतोल बनाया जाता है। जिसके कारण हमारे देहिक माध्यम द्वारा जो भी क्रियाकर्म सम्पन्न होते हैं, उनके प्रति हम निराश न होकर खुश रहते हैं। और गुरू ने साधना के आरम्भ में ही ऐसी जो अवस्था प्राप्त करवा दी है, उन प्राप्त अवस्था में क्या कोई विषमता निर्माण हुई, इसका अनुभव पंचमी के दिन किये जाने वाले अनुश्ठान द्वारा लेना है। साधना मार्ग में प्रथम प्राधान्य पंचभौतिक देहिक माध्यम का होता है। और यदि किसी कारणवश इन पंचतत्वों में विषमता हो तो यदि आप किसी भी साधन का अंगीकार करते हो, फिर भी उस साधना में आप एकरूपत्व प्राप्त नहीं कर पाते। इसलिये पंचमी के अनुष्ठान में हमारे इस पंचभौतिक देह के तत्वों में क्या किन्ही आगतिक विचार विकार परत्वे विषमता निर्माण हुई है, इसका अंदाजा अनुष्ठान से पहले व्यतीत किये दिनों से निकालें।

एकादशी के दिन आप जो अनुष्ठान करते हो, उस दिन पंचभौतिक देह के पंचकर्मेन्द्रिय, पंचज्ञानेन्द्रिय और बुद्धि इनका जो इष्टविकास गुरूकृपाशीर्वाद से हुआ है, क्या उन माध्यमों में कोई कमतरता या अधिकता उत्पन्न हुई है?इसका अनुभव लेना है। उसके लिये अनुभव सिद्ध पद्धति इस प्रकार से है कि अनुष्ठान के लिये उपस्थित रहने पर या इसके पश्वात के काल में सुविचारों के प्रति विचारों की प्रगति कितनी हुई है एवं अविचारों में कितनी वृद्धि हुई है। और इसका अनुभव लेते वक्त यदि सुविचारों का प्रमाण अधिक हो तो इसका मतलब है कि हम विकसित अवस्था में वृद्धि कर रहे हैं। याने हम गुरूकृपाशीर्वाद में अधिक काल जीवन व्यतीत कर रहे है। ऐसा अनुभव प्राप्त होता है। "पौर्णिमा" अथवा "अमावश्या" इन दिनों में देह के अतिसूक्ष तत्व याने पंचतन्मात्रायें, पंचप्राणकोश, बुद्धि, मन, चित्त, अहंकार एवं आत्मा आदि का समावेश साधना में होता है। आज प्राप्त हुई अवस्था परत्वे श्री गुरू ने कृपावंत होकर देहिक आत्मिक अवस्थाओं का एकरूपत्व आनन्दमय कोश से करवा दिया है जिसके कारण उस आनन्दमय तत्व में श्रीगुरू का निरंतर वास होता है। इसदिन अनुष्ठान करते वक्त पंचमी या एकादशी के दिन से भी अधिक एकाग्र होना आवश्यक है। परन्तु यदि एकाग्रता नहीं हो पाती तो उसका कारण है कि पंचमी, एकादशी के अनुष्ठान के अलावा यदि अन्य दिनों में हम हमारे देहिक माध्यम का गैरउपयोग (अयोग्य वर्तन, विचार) करते है तो पौर्णिमा, अमावश्या के दिन हमने अन्य दिनों से अधिक एकाग्र होना चाहिये वैसा सम्भव नहीं होता। इसलिये पंचमी से पौर्णिमा या अमावश्या तक हमारी ज्ञान–अज्ञान से प्राप्त जीवन का गैर उपयोग विचार, आचार, विकार परत्वे किया गया है इसका अन्दाजा लेकर, हमारी अनजाने में हमारे माध्यम द्वारा होने वाली इन गलतियों को हमने सुधारना चाहिये। पूर्व जीवन में आप भक्तों के घराने की परम्परानुसार या जन्मकर्मपरत्वे दोश जो की देह के बाहर थे जिनका निवारण हमें हमारे सामर्थ्य द्वारा कर पाना सम्भव नहीं था। इसलिये श्री गुरू यने कृपावंत होकर उन दोषों का निवारण किया। परन्तु जो दोष देह के भीतर है याने "पडिले वलण इंद्रिया सकला" ऐसे दोषों का निवारण करने का कार्य गुरू का न होकर हम भक्तों

का है। और यदि दूसरे लोग हमें इन दोशों का एहसास करते भी है फिर भी हम उन दोषों को अनदेखा कर देते है। इसलिये हमें प्राप्त अवस्था प्रीत्यर्थ हमने कौनसी दक्षता सावधानी से लेनी है। इसका अहसास होने के लिये गुरू आज्ञा से पंचमी, एकादशी, पौर्णिमा या अमावश्या के दिन अनुष्ठान करने की आज्ञा दी गई है।

आप भक्तों ने अपने परिचार में मेरी तस्वीर भक्तिभावना के साथ पूजनार्थ रखी है। इसके प्रति मुझे आजतक कभी भी धन्यता महसूस नहीं हुई। उसी प्रकार से कई भक्तों ने अपने घर बुलाकर "गुरू" कहकर बहुत आदरतिथ्य किया है। इसके प्रति आप भक्तों को समाधान महसूस हुआ होगा फिर भी मुझे उसके बारे में कभी भी समाधान महसूस नहीं हुआ। इसका कारण आप जब इस कार्य की ओर मार्गदर्शनार्थ आये, उस वक्त आपके ऐहिक जरूरतों के सवाल को मेरे माध्यम द्वारा हल किया गया। इसलिये आपने मेरी तस्वीर का पूजनार्थ स्वीकार किया। परन्तु यदि मैं आपको ऐहिक सुख प्राप्त नहीं करवाता तो क्या आप मेरी तस्वीर पूजनार्थ रखते?और ये ही सवाल मैं स्वयं से भी करता हूँ। आप भक्त मेरे द्वारा अपनी अपेक्षाओं को पूर्ण करने के विचार से मिलने आये, ठीक वैसी ही मेरी भी कुछ अपेक्षाएँ, इच्छाएँ आप भक्तों के माध्यम से पूर्ण हो ऐसी मेरी इच्छा थी और रहेगी। बार–बार होने वाली गाठभेंट, हरेक सम्मेलन में आपने मेरे गुणगान (तारीफ) गाये है। उन्हें मैंने सुना है परन्तु आजतक मैंने आप भक्त के लिये जो भी कुछ कार्य किया है उन कारणों के लिये मेरा जन्म नहीं हुआ है। मेरे जन्म का कारण जो कि गुरूकृपा से आपकी सेवा करने के कर्त्तव्य के रूप में है, इसमें महत्वपूर्ण कारण ऐसा है कि मेरे समान ही आपका भी प्राप्त जन्म सत्कारणी लगे। आपको कितना ऐहिक सुख प्राप्त हुआ और कौन–कौन से संकटों का निरसन गुरूकृपाशीर्वाद से हुआ है इसके बारे में मुझे कभी भी धन्यता महसूस नहीं हुई। इसका कारण जिस व्यक्ति माध्यम को जन्म लेकर ईश्वर का कार्य करना होता है, उन व्यक्तिमाध्यम का सामर्थ्य पत्थर में ईश्वर निर्माण का कार्य करना होता है। तो गुरूकृपाशीर्वाद से आपने जो ऐहिक सुख प्राप्त किया और प्राप्त सुखों के लिये आपने मेरी महती (गुणगान) गाई उसके बजाये यदि आप अपनी पारमार्थिक प्रगति कितनी हुई है, इसका निवेदन करते तो मैंने आप भक्तों के प्रति जो भी कर्त्तव्य किया, उसके प्रति मुझे समाधान महसूस होता। इसका स्पष्टीकरण याने गुरूमार्गदर्शनार्थ आने से पहले आपका काया–वाचा–मन पूर्णतः षड़विकारों के आधिन था। देहिक विकास न होने से अपका जीवन विकामय अवस्था में था। कृपाशीर्वाद की प्राप्ति के पश्चात कौन–कौन से विकारों की प्रखरता कम हुई है और हमारे जीवन जो कि विकामय था, वो ही जीवन गुरूकृपाशीर्वाद से कितना विकारमय हो चुका है। यदि इसका परिक्षण करें तो आपको पता चलेगा कि ये जो स्थित्यंतर अवस्था आपको अपने जीवन में कृपाशीर्वाद के कारण प्राप्त हुई है, कृपाशीर्वाद के अभाव में उन स्थित्यंतरों को अपने जीवन के अंत तक भी आप प्राप्त नहीं कर पाते, इसका बोध आपको होगा।

आप भक्तों का आज जो अवस्था प्राप्त हुई है, उस अवस्था की प्राप्ति की अपेक्षा के विचारों से आप गुरूमार्गी नहीं हुए। बल्कि जीवन में अनन्य भक्तिभावना से ईश्वर की शरण जायें, इस कर्त्तव्य की हमने उपेक्षा ही की। परन्तु श्री गुरू ने आपके अज्ञान के कारण आप भक्तों की उपेक्षा करने के बजाये जिन अपेक्षाओं की खोज में आप यहाँ पर आये, उस अपेक्षा से भी कई गुना अधिक सौख्य आपको प्राप्त करवा दिया।

कृपाशीर्वाद परत्वे हममें कौन–कौन से स्थित्यंर हुए, उसके प्रति नित्य परिक्षण करना और उसकी के अनुसार निरंतर वर्तन करना भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हम हमारे नित्य जीवन में यदि नये वस्त्र परिधान करते हैं, जो अन्य व्यक्ति उसे आसानी से जान लेते है, पहचान लेते हैं। आपको दूसरों को नये वस्त्रों के बारे में बताने की जरूरत नहीं पड़ती। उसी प्रकार से आज आपको गुरूकृपाशीर्वाद का बहुमूल्य वस्त्र प्राप्त हुआ है। जिसका लाभ आपको जन्मोजन्म तक होगा। यद्यपि यह वस्त्र किसी को दिखाई नहीं देगा परन्तु हमारे कृपावंत हो चुके है कहने पर इस कृपा का अनुभव हमारे आचार–विचारों द्वार प्राप्त होना चाहिये। इसके बजये यदि आपको कृपाशीर्वाद प्राप्त होने से पूर्व आपका जीवन आपके स्वयं के प्रति और दूसरों प्रति जैसा था, यदि वैसा ही अनुभव आपको स्वयं को और दूसरों को मिलता है तो इसका मतलब ये ही होगा कि कृपापात्र होकर भी आप अपने अज्ञानता के कारण उस कृपा की अवहेलना कर रहे हैं। और जब आपके काया–वाचा–मन माध्यम से आपके अनजाने में ही ऐसा अनादर होता है, उस वक्त कृपाशीर्वाद में वृद्धि होने के बजाये कृपाशीर्वाद का क्षय होता है। इसे जान लेना चाहिये।

अब आपको जो अवस्था प्राप्त हो चुकी है, उस अवस्था योग्य रूप से देखभाल कैसे करें, इस बोध का अनुभव लेने के लिये आप समर्थ हो। और इस अनुभव के साथ हरेक सेवक व्यक्ति ने अपने जीवन को गुरूमय करना है। ये सारे निवेदन और इस कार्य को आजतक आपने उन्हीं के कृपाशीर्वाद के फल के रूप में चखा है। उस फल की कभी न खत्म होने वाली मिठास, आप भक्तों के काया–वाचा–मन के द्वारा, जगत के दुःखी मानवों के जीवन को आधार स्वरूप सिद्ध हो इसलिये श्री सद्गुरू आपको सद्बुद्धि दे और श्री गुरू के इस कार्य को अजरामर करें ऐसी उनके चरणों में प्रार्थना।

सेवक,

।। शुभं भवतु ।।